कल्पतरु पुण्यात्मा प्रेम सुधा शवि नाम
कल्पतरु पुण्यात्मा प्रेम सुधा शवि नाम
हतिकारक संजीवनी शवि चतिन अवरिाम
पतति पावन जैसे मधु शवि रस नाके घोल
भक्ति के हंसा ही चुगे मोंती यह अनमोल
जैसे तनकि सुहागा सोने को चमकाए
शवि सुमरिंसे आत्मा अदबुदथ नखिरी जाये
जैसे चन्दन वृष को दंसते नहीं है नाग
शवि भक्तो के चोले को कभी लगे ना दाग
ॐ नम शविाय (2)

दया नधिि भूतेश्वर शवि है चतुर सुजन
कण कण भीतर है बसे नीलकंठ भगवान्
चंद्रचूड के नेत्र उमापति विशि्वेश
शर्नागैत के यह सदा पके सकल अनेक
शवि द्वारे प्रपंच का छल नहीं सकता खेल
आग और पानी का जैसे होता नहीं है मेल
भयाभंजना नटराज है डमरू वाले नाथ
शवि का वंदन जो करे शवि है उनके साथ
ॐ नम शविाय (2)

लाखो अश्वादमेध हो सो गंगा अस्नान
इनसे उत्तम है कही शवि चरणों का ध्यान
अलख नरिंजन नाथसे उपजे आत्मा ग्यान
भटके को रास्ता मलि मुशकाि हो आसान
अमर गुणों की खान है चति शुधि शवि ध्यान
सत संगती में बैठके करलो प्रस्च्यातिाप
लगिेश्वर के मननसे सद्धि हो जाते काज
नमो शविाय रटता जा शवि रखेंगे लाज
ॐ नम शविाय (2)

शवि चरणों को चुन्नेसे तनमन पावन होई
शवि के रूप अनुपकी समता करे ना कोई
महाबली महादेव है महा प्रभु महा काल
असुर नकिंदन भक्त की पीड़ा हरे तत्काल
सर्वयापी शवि भोला धर्म रूप सुख काल
अमरनानता भगवंता जगके पालन हार
शवि करता संसार के शवि शृष्टि के मूल
रोम रोम शवि रमने दो शवि ना जैय्यो भूल
ॐ नम शविाय (2)